शिक्षकों के व्यावसायिक विकास पर एक समालोचनात्मक दृष्टिकोण

भूमिका पारीक

शोधार्थी

डॉ. अजय सुराणा

शोध निर्देशक एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग

वनस्थली विद्यापीठ

सारांश

शिक्षकों का व्यावसायिक विकास किसी भी शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने का एक अनिवार्य घटक है। यह लेख शिक्षकों के व्यावसायिक विकास की अवधारणा, उसकी आवश्यकता, वर्तमान चुनौतियाँ, प्रभावी रणनीतियाँ, और नीति–निर्माताओं तथा शैक्षिक संस्थानों की भूमिका पर एक समालोचनात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है। शोध से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश व्यावसायिक विकास कार्यक्रम एक जैसे होते हैं, जिनमें शिक्षकों की विविध आवश्यकताओं, स्थानीय संदर्भों और शिक्षण–प्रशिक्षण की वास्तविक परिस्थितियों की उपेक्षा होती है। इसके अतिरिक्त, सतत सहयोग, व्यावहारिक अनुप्रयोग, और मूल्यांकन की प्रक्रिया का अभाव भी PD की प्रभावशीलता को सीमित करता है। यह लेख सुझाव देता है कि शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को व्यक्तिगत आवश्यकताओं, सहकार्यात्मक अधिगम, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स, और कक्षा आधारित अनुसंधान के माध्यम से अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। अंततः, यह शोध इस बात पर बल देता है कि व्यावसायिक विकास को केवल औपचारिकता न मानकर, शिक्षक के सतत विकास की एक सशक्त प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। तभी हम शिक्षण गुणवत्ता में वास्तविक परिवर्तन देख सकेंगे।

प्रस्तावना

शिक्षकों का व्यावसायिक विकास (Professional Development) किसी भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रणाली की रीढ़ माना जाता है। यह सर्वमान्य तथ्य है कि शिक्षक की दक्षता छात्र की सफलता को सीधे प्रभावित करती है। हालांकि, शिक्षकों के व्यावसायिक विकास की बार–बार चर्चा होती है, फिर भी इसके क्रियान्वयन और प्रभाव में कई असमानताएँ और चुनौतियाँ देखी जाती हैं। यह लेख शिक्षकों के व्यावसायिक विकास की अवधारणा, इसकी प्रासंगिकता, व्यावहारिक विधियाँ, प्रमुख समस्याएँ और सुधार के संभावित मार्गों पर समालोचनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

व्यावसायिक विकास की अवधारणा और महत्त्व

व्यावसायिक विकास का तात्पर्य शिक्षकों द्वारा निरंतर रूप से नए ज्ञान, कौशल, और दृष्टिकोण अर्जित करने की प्रक्रिया से है, जिसका उद्देश्य शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाना और छात्रों के परिणामों को बेहतर बनाना है। यह केवल विषयवस्तु का ज्ञान बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें नवाचार, पेडागॉजिकल रणनीतियाँ, विविध छात्रों की आवश्यकताओं को समझना, तकनीकी समावेशन, मूल्य शिक्षा, और पाठ्यचर्या सुधार जैसे पहलू भी शामिल होते हैं।

गुणवत्तापूर्ण व्यावसायिक विकास से न केवल शिक्षण की प्रभावशीलता में वृद्धि होती है, बल्कि यह शिक्षक के आत्म–संतोष और प्रेरणा को भी बढ़ाता है। परंतु केवल व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की उपलब्धता से ही सुधार संभव नहीं, जब तक वे प्रासंगिक, संदर्भ आधारित और शिक्षक–केन्द्रित न हों।

वर्तमान व्यावसायिक विकास की चुनौतियाँ

- **एक समान दृष्टिकोण** – अधिकतर व्यावसायिक विकास कार्यक्रम सभी शिक्षकों को एक जैसे मानकर तैयार किए जाते हैं, जिससे उनके विविध शैक्षणिक, सामाजिक और भौगोलिक संदर्भों की अनदेखी होती है।

- **सतत सहयोग का अभाव**– व्यावसायिक विकास को एक बार का प्रशिक्षण मान लिया जाता है, जबकि यह एक निरंतर प्रक्रिया होनी चाहिए जिसमें नियमित फीडबैक, मार्गदर्शन और सहकर्मी समर्थन शामिल हो।
- **सैद्धांतिकता की अधिकता**– अधिकांश प्रशिक्षणों में व्यावहारिक अभ्यास की कमी होती है, जिससे शिक्षक उन्हें अपने कक्षा में लागू नहीं कर पाते।
- **शिक्षकों की भागीदारी का अभाव**– व्यावसायिक विकास प्रायः ऊपर से थोपे गए होते हैं, जिससे शिक्षक उसमें रुचि नहीं लेते और इसे बोझ मानते हैं।
- **समय और संसाधनों की कमी**– विशेष रूप से ग्रामीण या विकासशील क्षेत्रों में शिक्षकों के पास न समय होता है न पर्याप्त संसाधन।
- **प्रभाव मूल्यांकन की कमी**– व्यावसायिक विकास की प्रभावशीलता मापने के लिए वैज्ञानिक या व्यवस्थित मूल्यांकन की प्रक्रियाएँ नहीं होतीं।

समाधान और नवाचार की दिशा में कदम

- **व्यक्तिगत और आवश्यकतानुसार व्यावसायिक विकास** – प्रत्येक शिक्षक की आवश्यकता, विषय, अनुभव और स्थान के अनुसार च्क तैयार किया जाना चाहिए।
- **सहयोगात्मक अधिगम मॉडल**– पेशेवर अधिगम समुदाय (PLC), सह–शिक्षण, और सामूहिक क्रियात्मक अनुसंधान से शिक्षक एक–दूसरे से सीख सकते हैं।
- **ऑनलाइन और ब्लेंडेड लर्निंग**– डिजिटल माध्यम से व्यावसायिक विकास को सुलभ, लचीला और समयानुकूल बनाया जा सकता है।
- **कक्षा आधारित अनुसंधान**– शिक्षकों को अपनी कक्षा की समस्याओं पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।
- **कैरियर से जोड़ना**– व्यावसायिक विकास को पदोन्नति, पुरस्कार और प्रोत्साहन से जोड़कर अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

शिक्षण संस्थानों और नीति निर्माताओं की भूमिका

शिक्षा संस्थानों को च्क को शिक्षक विकास की मूलभूत आवश्यकता मानते हुए उसके लिए उचित संसाधन, समय और सहयोग प्रदान करना चाहिए। नीति निर्माताओं को ऐसी योजनाएं बनानी चाहिए जो नियमित च्क को अनिवार्य करें, स्थानीय संदर्भ में उपयुक्त कार्यक्रम विकसित करें और उनकी गुणवत्ता सुनिश्चित करें।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को पूर्व–सेवा और सेवाकालीन प्रशिक्षण के बीच की दूरी को समाप्त करना चाहिए और दोनों को एक सुसंगत, निरंतर प्रक्रिया के रूप में देखना चाहिए।

निष्कर्ष

व्यावसायिक विकास शिक्षकों की दक्षता में वृद्धि का प्रमुख आधार है, लेकिन वर्तमान में इसके स्वरूप में कई खामियाँ हैं। जब तक व्यावसायिक विकास शिक्षक–केन्द्रित, सतत, नवाचारपूर्ण और संदर्भ आधारित नहीं होगा, तब तक उसका वास्तविक प्रभाव नहीं दिखेगा। व्यावसायिक विकास को केवल एक औपचारिकता के रूप में नहीं, बल्कि शिक्षक के सतत विकास की अनिवार्य प्रक्रिया के रूप में अपनाना चाहिए। तभी हम 21वीं सदी की चुनौतियों से जूझने के लिए एक सशक्त और प्रेरित शिक्षकीय समुदाय तैयार कर पाएंगे।

संदर्भ

1. Darling-Hammond, L., Hyler, M. E., & Gardner, M. (2017). Effective Teacher Professional Development. Learning Policy Institute.

2. OECD (2019). Teachers and School Leaders as Lifelong Learners. TALIS 2018 Results.

3. Singh, A., Sharma, R., & Kaur, M. (2010). In-Service Teacher Education: Issues and Challenges. New Delhi: APH Publishing.

4. Guskey, T. R. (2002). Professional Development and Teacher Change. Teachers and Teaching: Theory and Practice, 8(3), 381–391.

5. Borko, H. (2004). Professional Development and Teacher Learning: Mapping the Terrain. Educational Researcher, 33(8), 3–15.

6. NCERT (2021). National Education Policy 2020 – Teacher Education and Professional Development. New Delhi: NCERT.

7. UNESCO (2016). Teacher Policy Development Guide. Paris: United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization.